सुपौल जिला में अनुसूचित जाति का स्थानिक वितरण का भौगोलिक विश्लेषण

डॉ॰ सुदीप कुमार
ग्रामः—नादो, पोस्टः— दमगढ़ी
थानाः— सौरबाजार, जिलाः— सहरसा

परिचय :—

सुपौल जिला में अनुसूचित जातियाँ एक समाजिक व्यवस्था का अंग है, जिसमें अनेक जातियाँ एवं उपजातियाँ सम्मलित है। समाज का यह वर्ग अति पिछड़ा, शोषित उपेक्षित एवं अर्थ विपन्न ग्रसित जाति है। सरकारी नीति, सहयोग एवं सरकारी सेवाओ में आरक्षण से कुछ परिवारो का आर्थिक, शैक्षणिक एवं समाजिक दशाओ में सुधार हुआ है, फिर भी यह जाति समूह अभी भी अन्य जाति समूहो से अधिक पिछड़ा हुआ है। सुपौल जिला में अनुसूचित जाति की कुल संख्या 354249 है जिसमें 182545 पुरूष तथा 171704 स्त्री जनसंख्या है। यहाँ की कुल जनसंख्या का 15.89 प्रतिशत अनुसूचित जाति है, लेकिन प्रखण्ड स्तरीय इसकी संख्यात्मक वितरण में काफी असमनता पायी जाती है।

भूमिका :—

भारतीय समाजिक व्यवस्था में विभिन्न कार्यो के सम्पादन हेतु वर्ण व्यवस्था का इतिहास सभ्य मावन के प्रारंभिक चरण से ही रहा है। यहाँकार्यो के आधार पर मुख्यतः चार जाति समूह है। इन्ही जाति समूह में अनुसूचित जाति है, जो समाज का शोषित दलित वर्ग है। यह जाति अनेक उपजातियो का समूह है, जिसका अलग—अलग कार्यो के आधार पर जाति का नामकरण हुआ। इन्ही जातियो में धोबी, नाई, चमार, लौहार आदि है। प्राचीन भारतीय समाज में विभिन्न कार्यो का सम्पादन समाज के विभिन्न वर्णो से होता था। समाज का कार्यिक स्वरूप इतना संगठित था कि समाज के सभी वर्गो के आवश्यकता की पूर्ति एक—दूसरे के समाजिक सहयोग से होता था। समाज में ब्राहमणो का कार्य अध्ययन—अध्यापन एवं पूजापाठ क्षत्रीयो का कार्य शासन एवं सुरक्षा, वैश्य का कार्य वानिज्य व्यपार एवं शुद्रो का कार्य सेवा भाव था। विभिन्न तकनीक की जानकारी हेतु कोई संस्था नही थी, वरण परिवार ही तकनीकी ज्ञान का केन्द्र होता था। जहाँ परम्परागत कार्यो सीखते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक यह व्यवस्था बनी रही, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आर्थिक तथा वैज्ञानिक विकास के साथ—साथ सभी वस्तुओ का उत्पादन एवं बाजारीकरण होने से समाजिक आवश्यकताओ की पूर्ति समाज से कम बाजार से अधिक होने लगा। समाज का सबसे निचले पैदान पर स्थित अनुसूचित जातियो का वर्तमान समय तीव्रगति से उत्तरोत्तर विकास हो रहा है, जिसमें सरकारी योजनाओ का सर्वाधिक योगदान है।

अध्ययन का उद्देश्य :—

प्रस्तुत लेख में अध्ययन का मुख्य उद्देश सुपौल जिला में शोषित, दलित, अर्थ विपन्न अनुसूचित जाति का संख्यात्मक एवं गुणात्मक पक्षो का अध्ययन आर्थिक विकास के परिपेक्ष में करना है। संख्यात्मक पक्ष में अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न प्रखण्डवार वितरण ज्ञात करना है। गुनात्मक पक्षो में साक्षरता एवं व्यवसायिक संरचना का अध्ययन है। आर्थिक एवं समाजिक पक्षो के उत्थान का सुझाव देना है।

विधि तंत्र :—

आनुभविक विधि लेख का मुख्य आधार है, जो आँकड़ो पर आधारित हैं। आँकड़ो का संग्रह में प्राथमिक एवं द्वितीयक विधियो का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़ो का संग्रह स्वंय सर्वेक्षण से किया गया है जिसमें समाज में अनुसूचित जातियो की दशाओ का अध्ययन किया गया। जबकि द्वितीय आँकड़ो का संग्रह भारत की जनगणना 2001 एवं 2011 से किया गया। लेख के लिए पूर्व में किये गये अध्ययन पत्रिकाओं, पुस्तको आदि से अनेक तथ्यो का संग्रह किया गया है। आधुनिक तकनीकी से मानचित्र तथा आलेख बनाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :–

प्रस्तुत लेख का अध्ययन क्षेत्र सुपौल जिला है जो बिहार के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित पश्चिमी कोशी मैदान का एक जिला है। यह कोशी मैदान के उत्तरी–पश्चिमी भाग में अवस्थित एक राजनैतिक प्रदेश है जिसका सीमांकन सुपौल जिला के सीमा से होती है। इसका सीमांकन उत्तर में अन्तर्राष्ट्रीय सीमा नेपाल का है जबकि दक्षिण में सहरसा एवं मधेपुरा जिला पूरब में अररिया तथा पश्चिम में मधुबनी जिला के मध्य अवस्थित है। ज्यामितीय अवस्थिति में अक्षांशीय विस्तार 25^0 37'उ० से $26^0$25'उ० तथा देशान्तरीय विस्तार 86^0 22'पू० से 87^0 10'पू० तक है। इसकीलम्बाई 105 Kmचौड़ाई 83 Km तथा क्षेत्रफल 2425Km^2है। ग्रामीण क्षेत्रफल 2388 Km^2तथा नगरीय क्षेत्रफल 36.34 Km^2है। सुपौल जिला का मुख्यालय सुपौल है। सम्पूर्ण प्रदेश उपोष्ण मानसूनी जलवायु के क्षेत्र में अवस्थित है।

विश्लेषण :–

सुपौल जिला में अनुसूचित जाति का संख्यात्मक वितरण सभी क्षेत्रो या प्रखण्डो में एक समान नही है। फिर भी सम्पूर्ण जिला के प्रायः सभी क्षेत्रो में इसका वसाव है। यअपि इसकी संख्या अन्य जातियो की तुलना में कम है फिर भी किसी भी प्रखण्ड में वहाँकी कुल संख्या का 10 प्रतिशत कम नही है और न 20 प्रतिशत से अधिक है। समाजिक संघटक एवं समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्रियाओ के लिए सभी वर्णो का होना अनिवार्य माना जाता था। अतः प्रायः सभी क्षेत्रो में न्यूनाधिक संख्या में सभी वर्गो के लोगो का वसाव पाया जाता है। सम्पूर्ण प्रदेश कोशी नदी के जलोढ़ से निर्मित उपजाऊ समतल मैदान होने के कारण मानव वसाव आदिकाल से ही रहा है। उपजाऊ मैदान होने से कृषि प्रधान क्षेत्र रहा है, यहाँकृषक एवं कृषि श्रमिक का वसाव कृषि जन्य आवश्यकता रही है। अतः अधिकांश अनुसूचित समुदाय कृषि श्रमिक के रूप में कार्यरत है। कृषि के अतिरिक्त पशुपालन, मत्स्य पालन आदि व्यवसाय में ये लोग संलग्न है। मानव वसाव उपयुक्त भौगोलिक दशाओ वाले क्षेत्र में अधिक होते है जबकि अनुपयुक्त दशाओ वाले क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम होते है।

अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जातियो का निवास एवं वितरण में असमानता पायी जाती है जिसका मुख्य कारण प्राकृतिक, समाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि का असामन पाया जाना है। सुपौल जिला में प्रखण्डवार अनुसूचित जाति का वितरण निम्न आँकड़ो से स्पष्ट है –

LOCATION MAP OF BIHAR IN INDIA & SUPAUL IN BIHAR

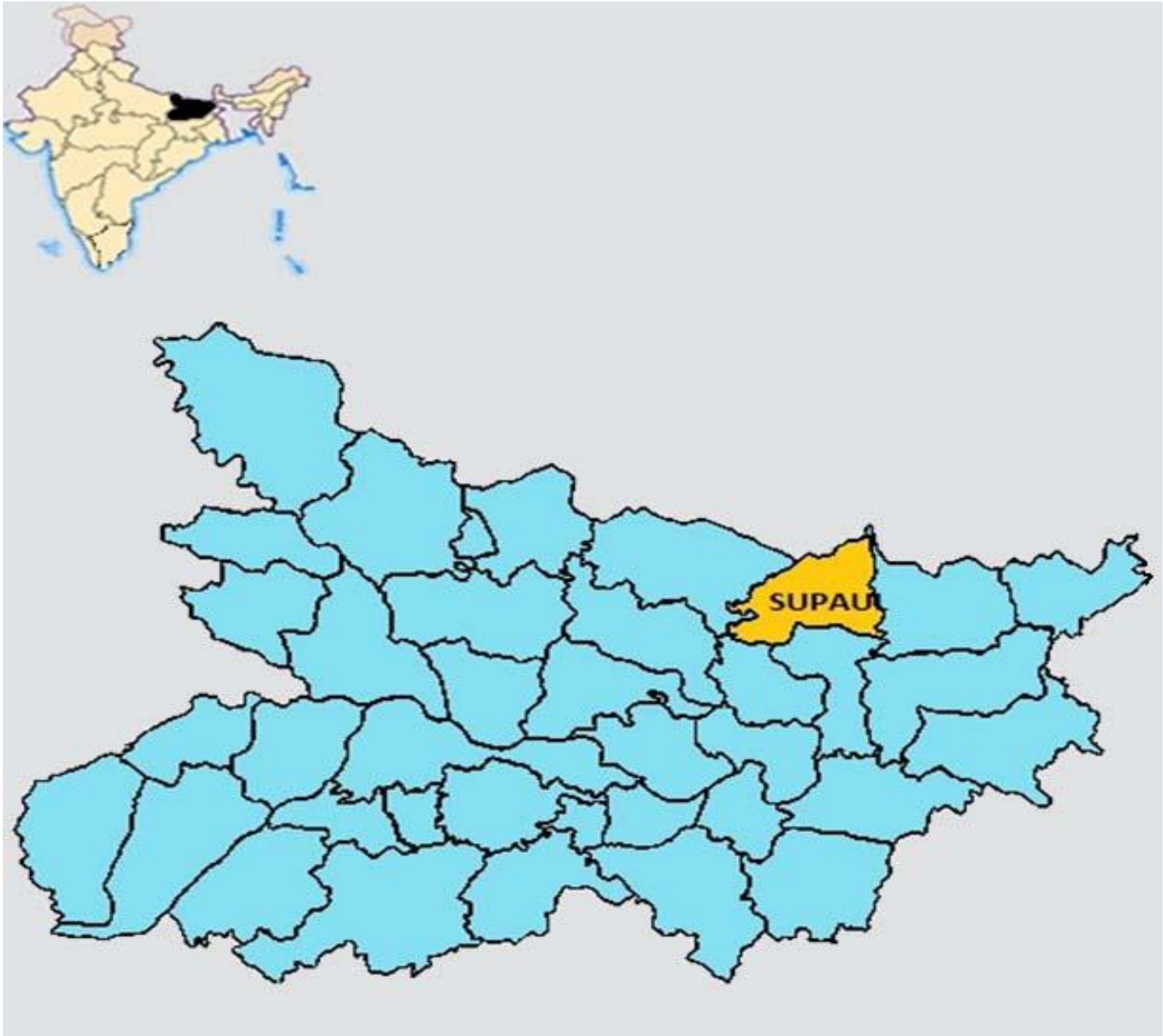

Map – 1

तालिका – 1
सुपौल जिला में अनुसूचित जाति का वितरण

प्रखण्ड	अनुसूचित जाति की संख्या	पुरूष प्रतिशत में	स्त्री प्रतिशत में
निर्मली	11058	51.23	48.77
बसन्तपुर	37730	51.61	48.39
छातापुर	54770	51.54	48.46
प्रतापगंज	15131	51.54	48.46
राघोपुर	32229	51.38	48.62
सरायगढ़	17369	51.42	48.58
किसनपुर	19719	51.68	48.32
मरौना	15872	51.27	48.73
सुपौल	51258	51.70	48.30
पिपरा	34692	51.33	48.67
त्रिवेणीगंज	64419	51.57	48.43
कुल जिला	354249	51.53	48.47

स्त्रोत – भारत की जनगणना 2011, बिहार श्रृखला 11

तालिका 1 में सुपौल जिला में प्रखण्डवार अनुसूचित जाति के वितरण को दर्शाया गया है। सम्पूर्ण जिला में कुल जनसंख्या 354249 है जो कुल जनसंख्या का 15.89 प्रतिशत है, परन्तु स्थानिक वितरण में असमानता पायी जाती है। प्रखण्डवार वितरण देखा जाय तो सबसे कम निर्मली प्रखण्ड में 11054 है जिसमें 51.23 प्रतिशत पुरूष तथा 48.77 प्रतिशत स्त्री जनसंख्या है। दूसरी ओर सबसे अधिक अनुसूचित जाति की जनसंख्या छातापुर में 54770 है जिसमें 51.54 प्रतिशत पुरूष तथा 48.46 प्रतिशत स्त्री जनसंख्या है। अन्य प्रखण्डो में बसन्तपुर में 37730 में 51.61 प्रतिशत पुरूष तथा 48.39 प्रतिशत स्त्री की संख्या है। प्रतापगंज प्रखण्ड में कुल संख्या 15131 में 51.54 प्रतिशत पुरूष तथा 48.46 प्रतिशत स्त्री, राघोपुर प्रखण्ड में कुल संख्या 32229 में 51.38 प्रतिशत पुरूष तथा 48.62 प्रतिशत स्त्री, सरायगढ़ प्रखण्ड में कुल संख्या 17369 में 51.42 प्रतिशत पुरूष तथा 48.58 प्रतिशत स्त्री, किसनपुर प्रखण्ड में कुल संख्या 19719 में 51.68 प्रतिशत पुरूष तथा 48.73 प्रतिशत स्त्री की संख्या है। मरौना प्रखण्ड में कुल संख्या 15872 में 51.27 प्रतिशत पुरूष तथा 48.73 प्रतिशत स्त्री, सुपौल प्रखण्ड में कुल संख्या 51258 में 51.70 प्रतिशत पुरूष तथा 48.30 प्रतिशत स्त्री, पिपरा प्रखण्ड में कुल संख्या 34692 में 51.33 प्रतिशत पुरूष तथा 48.67 प्रतिशत स्त्री तथा त्रिवेणीगंज प्रखण्ड में 64419 में 51.57 प्रतिशत पुरूष तथा 48.43 प्रतिशत स्त्री की संख्या है। सभी प्रखण्डो में पुरूष की तुलना में स्त्री की संख्या 1–2 प्रतिशत कम है।

सुपौल जिला में अनुसूचित जाति का वितरण

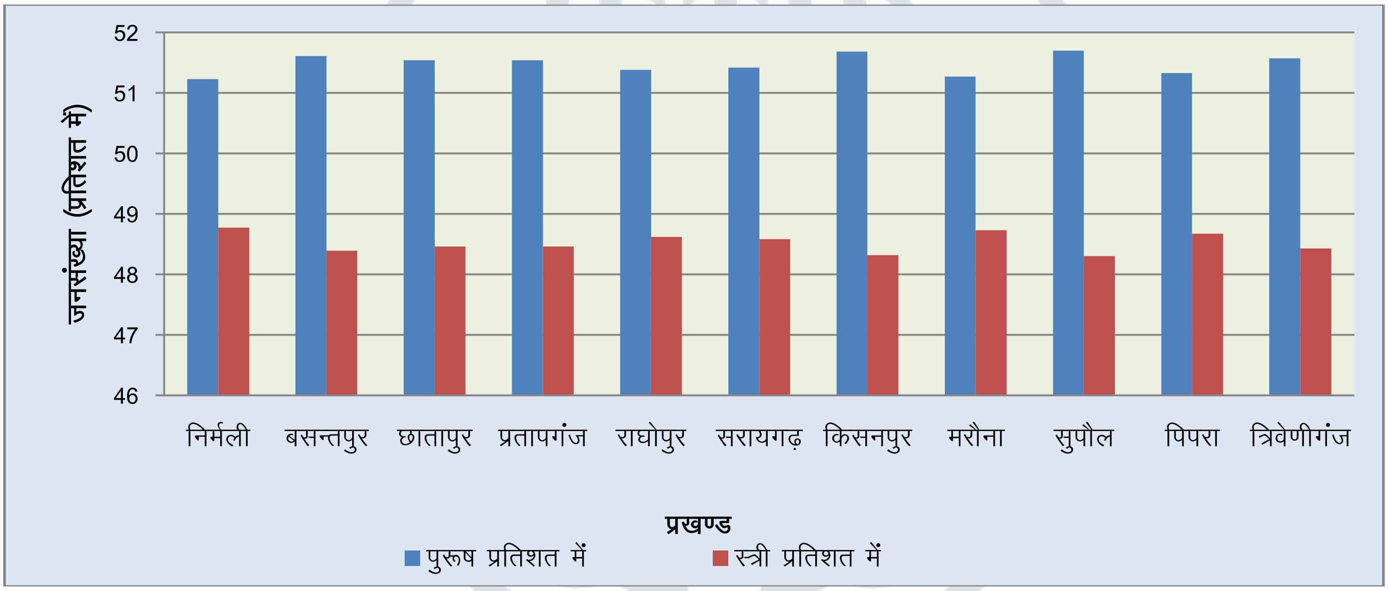

Fig. – 1

सुपौल जिला में अनुसूचित जाति का तुलनात्मक वितरण में काफी असमानताये पायी जाती है। जिला के कुल अनुसुचित जाति का प्रखण्डवार तुलनात्मक वितरण निम्न आँकड़ो से स्पष्ट है –

तालिका – 2
जिला एवं प्रखण्डवार कुल अनुसूचित जाति की संख्या का प्रतिशत

क्रम संख्या	प्रखण्ड	प्रखण्ड के कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जिला के कुल जनसंख्या का प्रतिशत
1.	निर्मली	11.23	0.45
2.	बसन्तपुर	18.68	1.69
3.	छातापुर	19.12	2.41
4.	प्रतापगंज	14.16	0.67
5.	राघोपुर	14.95	1.45
6.	सरायगढ़	14.15	0.77
7.	किसनपुर	11.76	0.88

8.	मरौना	10.94	0.71
9.	सुपौल	14.23	2.25
10.	पिपरा	17.23	1.55
11.	त्रिवेणीगंज	19.98	2.88
कुल जिला		15.69	15.89

जिला एवं प्रखण्डवार कुल अनुसूचित जाति की संख्या का प्रतिशत

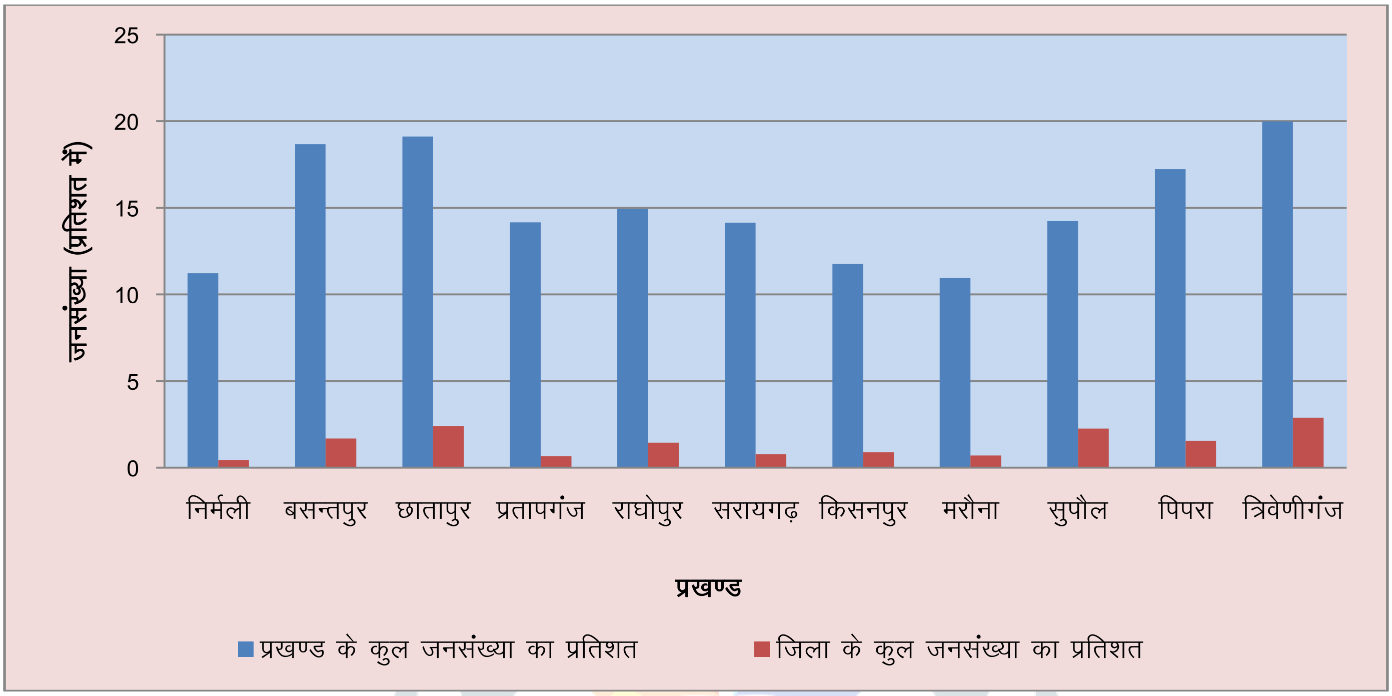

Fig. – 2

तालिका 2 में सुपौल जिला में अनुसूचित जाति की संख्या को जिला के कुल जनसंख्या का प्रतिशत तथा प्रखण्ड के कुल जनसंख्या प्रतिशत के रूप में दर्शाया गया है। जिला के कुल जनसंख्या की तुलना में अनुसूचित जाति की संख्या सबसे कम निर्मली में 0.45 प्रतिशत है जबकि सबसे अधिक त्रिवेणीगंज में 2.88 प्रतिशत है। इसी प्रकार अन्य प्रखण्डो में प्रतापगंज प्रखण्ड में 0.67 प्रतिशत, मरौना प्रखण्ड में 0.71 प्रतिशत, सरायगढ़ प्रखण्ड में 0.77 प्रतिशत, किसनपुर प्रखण्ड में 0.88 प्रतिशत, राघोपुर प्रखण्ड में 1.45 प्रतिशत, पिपरा प्रखण्ड में 1.55 प्रतिशत, बसन्तपुर प्रखण्ड में 1.69 प्रतिशत तथा छातापुर प्रखण्ड में 2.41 प्रतिशत पाया जात है। प्रखण्ड के कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति की जनसंख्या वितरण में भी असमानता पायी जाती है जिसे निम्नांकित समूहो में बाँटा जा सकता है –

तालिका – 3

सुपौल जिला में प्रखण्ड के कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति का वितरण समूह वर्ग

क्रम संख्या	समूह वर्ग	प्रखण्डो की आवृत्ति	प्रखण्डो में अनुसूचित जाति का प्रतिशत
1.	< 14%	03 (कुल आवृत्ति का 27.27 प्रतिशत)	मरौना 10.95, निर्मली 11.23, किसनपुर 11.70
2.	14 – 17%	04 (कुल आवृत्ति का 36.36 प्रतिशत)	सरायगढ़ भवटियाही 14.15, प्रतापगंज 14.16, सुपौल 14.23, राघोपुर 14.95
3.	17%<	04 (कुल आवृत्ति का 36.36 प्रतिशत)	पिपरा 17.23, बसन्तपुर 18.68,छातापुर 14.12, त्रिवेणीगंज 19.18

स्त्रोत – भारत की जनगणना 2011, बिहार श्रृखला 11

सुपौल जिला में प्रखण्ड के कुल जनसंख्या में अनुसूचित जाति का वितरण समूह वर्ग

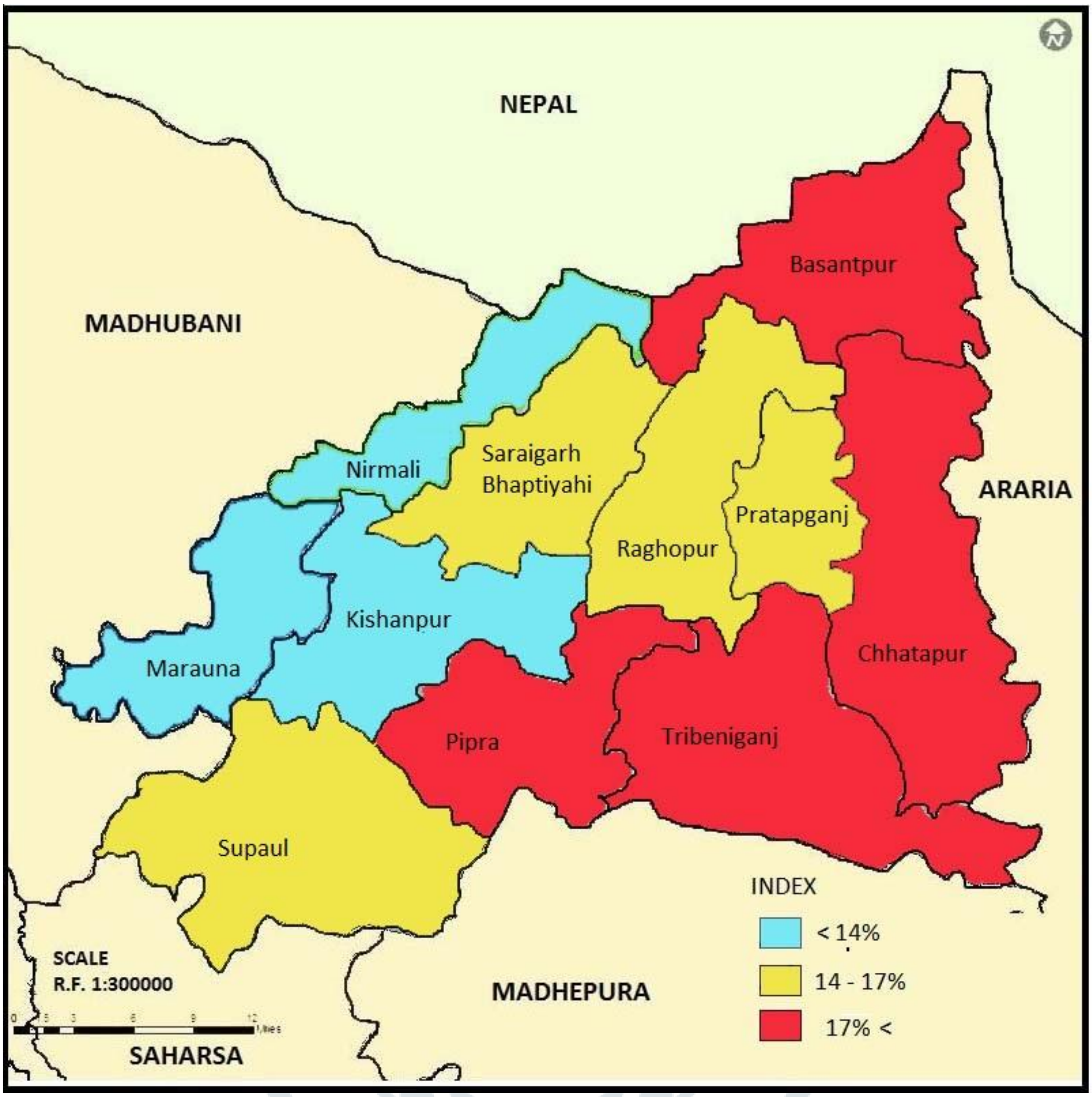

Map – 3

तालिका 3 में प्रखण्डो की कुल संख्या के अनुपात में अनुसूचित जाति की संख्या को दर्शाया है, जिसे तीन वर्ग समूह में रखा गया है जो निम्नांकित है –

1. 14 प्रतिषत से कम संख्या वाले प्रखण्ड :–

इसके अन्तर्गत 03 प्रखण्ड सम्मलित है जो कुल प्रखण्डो का 27.27 प्रतिशत है। जिसमें मरौना 10.94 प्रतिशत निर्मली 11.23 प्रतिशत तथा किसनपुर 11.70 प्रतिशत है। अन्य वर्ग समूहो की तुलना में यहॉन्यून संख्या पायी जाती है।

2. 14 से 17 प्रतिषत संख्या वाले प्रखण्ड :–

इस वर्ग समूह में 04 प्रखण्ड सम्मलित है जिसमें सरायगढ़ भवटियाही 14. 15 प्रतिशत, प्रतापगंज प्रखण्ड 14.16 प्रतिशत, सुपौल प्रखण्ड 14.16 प्रतिशत तथा राघोपुर 14.95 प्रतिशत अनुसूचित जातियो का वसाव है, जो कुल प्रखण्डो का 36.36 प्रतिशत प्रखण्ड है।

3. 17 प्रतिषत से अधिक संख्या वाले प्रखण्ड :–

इस वर्ग समूह में कुल प्रखण्डो का 36.36 प्रतिशत प्रखण्ड सम्मलित है, जिसमें पिपरा प्रखण्ड 17.23 प्रतिशत, बसन्तपुर 18.68 प्रतिशत, छातापुर 19.12 प्रतिशत, त्रिवेणीगंज 19.18 प्रतिशत प्रखण्ड है। इस वर्ग में 04 प्रखण्ड आते है।

अनुसूचित जातियो में शिक्षा का विकास अन्य वर्णो की अपेक्षा काफी कम है। अध्ययन क्षेत्र में केवल 39 प्रतिशत लोग साक्षर है। यदपि पिछले कुछ वर्षो सरकारी प्रयास एवं आरक्षण नीति से लाभान्वित हेतु शिक्षा का विकास हो रहा है। आरक्षण का लाभ कुछ ही परिवारो तक सीमित है, जो खासकर पहले से लाभ ले रहे है। जिससे वास्तविक रूप से पिछले दलित अभी भी उसी अवस्था में है। यदपि प्रधानमंत्री आवास, सड़क योजना रोजगार आदि का लाभ मिलने से आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ है। यह सुधार समाज के अन्य वर्षो की अपेक्षा कम है। छुआ–छुत प्रायः समाप्त हो चुका है। केवल कुछ पिछड़े क्षेत्रो में न्यून पैमाने पर यह भावना अभी भी है।

सुझाव एवं निष्कर्ष :–

अध्ययन क्षेत्र सुपौल जिला में अनुसूचित जातियाँ अभी भी काफी पिछड़े हुए है। इनके उत्थान के लिए सभी प्रकार के सरकारी प्रयास जारी है, लेकिन भ्रष्टाचारियो के कारण योजजनाओ का उचित लाभ नही मिल पाता है। शिक्षा के लिए विशेष व्यवस्था के बावजूद भी ये लोग शिक्षा के प्रति उदासीन होते है। इसका मुख्य कारण आरक्षण का लाभ केवल कुछ ही परिवार को मिलता है, अन्य लोग सरकारी नौकरी का आशा नही रखते, वरण इनकी मांसिकता शारिरीक श्रम की होती है। दलित गरीब लोगो के उत्थान हेतु आरक्षण से लाभान्वित लोगो को आरक्षण से अलग रखा जाय तथा जिन्हे आरक्षण का लाभ नही मिला है वैसे परिवार को यह लाभ दिया जाय। लोगो अपने अधिकार तथा सरकारी लाभ के प्रति जागरूक किया जाय। जिससे आर्थिक, समाजिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक विकास संभव हो सके।

–: संदर्भ सूची :–

1. भारत की जनगणना 2011, बिहार श्रृखला 11
2. Chandna R. C. – Introduction of Population Geography Kalyani Publication New Delhi.
3. Sharilf A – Indian Human development Report.
4. Gosal G. S. – Literacy in India An Interpretative study Rural Society.